संस्थापित १८६७ ई.

ओ३म्

उर ज्योतिः चक्रथु आर्याय — ओ३म् — आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२१ ● अंक : १७ ● २६ अप्रैल, २०१६ वैशाख कृष्ण पक्ष चतुर्थी सम्वत् २०७३ ● दयानन्दाब्द १६२ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११७

आर्य समाज अमरोहा उत्तर प्रदेश का नवसंवत्सर एवं आर्य समाज स्थापना दिवस सम्पन्न

आर्य समाज ने विश्व में सुख शान्ति स्थापित करने का संदेश दिया -देवेन्द्रपाल वर्मा, सभा प्रधान

आर्य समाज अमरोहा उ.प्र. द्वारा नव संवत्सर २०७३ एवं आर्य

समाज का १४१वां स्थापना दिवस दिन ८ अप्रैल, २०१६ को बड़ी धूमधाम से उल्लासपूर्वक मनाया गया।

इस पावन अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी, मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी एवं उप प्रधान डा. धीरज सिंह जी के निर्विरोध चुने जाने पर स्वागत समारोह का भी आयोजन किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी ने अपने सम्बोधन में सभी नगरवासियों को नव वर्ष की शुभकामनायें प्रदान करते हुए भावी जीवन की सुख समृद्धि हेतु कामना की तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज के कार्यक्रमों को आबालवृद्ध तक पहुँचाने का संकल्प दिलाया। आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी ने आर्य

समाज अमरोहा के सभी पदाधिकारियों, सदस्यों व उपस्थित जन समूह को नवसंवत्सर २०७३ की हार्दिक बधाई दी। इसी चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा को बम्बई में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने प्रथम आर्य समाज की स्थापना १० अप्रैल १८७५ को की थी। तत्कालीन पौराणिक वेदान्ती आदि ने अनेक युक्तियों व विरोधों के द्वारा आर्य समाज की स्थापना में अवरोध उत्पन्न किए। यह तो उन दूरदर्शी सज्जनों का ही विशेष आग्रह व प्रयास था जो उक्त प्रथम आर्य समाज की स्थापना स्वामी जी के द्वारा हुई और आज हम सब को स्वामी जी के बताए रास्ते पर चलने की आवश्यकता है। आज हमारे युवा रास्ता भटकर कर पाश्चात्य रंग में आकंठ डूब चुके हैं उन्हें अपनी प्राचीन वैदिक परम्पराओं व विधाओं का ज्ञान नहीं है जब कि हमारे पूर्व के ऋषियों ने वेदानुकूल नियमों की रचना कर काफी कुछ शोध करने के बाद की थी। जिनकी अवहेलना करने की कोई हिम्मत नहीं करता था। एक राजा भी धर्म गुरू राजगुरू की आज्ञा से बंधा हुआ था। हमें उन भटके हुए युवाओं को अपनी प्राचीन गौरवशाली वैदिक मान्यताओं से अवगत कराने की नितान्त आवश्यकता है तभी स्वामी जी की आर्य समाज की स्थापना का उद्देश्य सफल व सुगम होगा।

सभी पदाधिकारियों का अभिनन्दन आर्य समाज अमरोहा उ.प्र. के प्रधान श्री हेतराम सागर, मंत्री श्री राजनाथ जी व कोषाध्यक्ष श्री अभय आर्य, अधिष्ठाता श्री विनय आर्य एवं श्री ओमपाल जी आदि द्वारा किया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा का भव्य स्वागत

सभी आर्यों का आज संगठित होना आवश्यक-देवेन्द्रपाल वर्मा

आर्य समाज बुढ़ाना, मुजफ्फर नगर एवं जिला प्रतिनिधि सभा मुजफ्फर नगर के संयुक्त प्रयास से दिनांक १६ अप्रैल, २०१६ से १६ अप्रैल, २०१६ तक ऋग्वेद पारायण यज्ञ एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा व उनके सहयोगियों का तीसरी बार निर्विरोध चुने जाने पर अभिनन्दन समारोह का भव्य आयोजन सफलतापूर्वक किया गया।

श्री देवेन्द्रपाल वर्मा ने अपने उद्बोधन में वर्तमान समय में आर्य समाजों की आपसी खींचातानी व पैंतरेबाजी पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा-आज यदि महर्षि दयानन्द

जीवित होते तो निश्चित रूप से हमारे कथित आर्यों की दशा देखकर अत्यन्त दुखी होते, जिस महर्षि ने कहा था कि ''यदि वेदों के विरुद्ध मैं भी कुछ बोलूँ तो कदापि मत मानना, केवल वेद की ही मानना'' हम आर्यो की।

आज हालात यह हो गये हैं कि हम अपने आगे महर्षि के अभिकथनों का ढोल तो बड़ी जोर से पीटते हैं पर मानते बिलकुल नहीं, वेदों की तो बात ही छोड़ दीजिए।

हमारे स्वार्थ व हित महर्षि व वेदों से शायद बड़े हो गये हैं तभी तो हम देख नहीं पा रहे हैं कि जिस उद्देश्य के लिए आर्य समाज की स्थापना की गई वह पीछे छूट गये हैं हमारे स्वार्थ बड़े हो गये हैं। महर्षि ने असत्य से कभी समझौता नहीं किया यदि करते तो आज उन्हें कोई महर्षि नहीं कहता। एक हमारी दशा-कि हम अपने स्वार्थ हित के लिए कोई भी समझौता कभी भी करने के लिए उत्सुक रहते हैं।

हमें अब आत्म मंथन की नितान्त आवश्यकता तो है ही बुनियादी तौर पर संगठन को मजबूत करना होगा।

श्री देवेन्द्रपाल जी का स्वागत डी.ए.वी. डिग्री कालेज बुढ़ाना मुजफ्फर नगर के विशाल प्रागण में श्री राजीव कुमार आर्य (प्रधान आर्य समाज बुढ़ाना)श्री अरविन्द (मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा मुजफ्फर नगर) श्री ऋषि पाल जी डा. प्रदीप जी, डा. धर्मवीर जी, डा. अरुणा त्यागी सुश्री रेखा त्यागी आदि ने पुष्प गुच्छ देकर हार्दिक अभिनन्दन किया।

इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

वेदामृतम्

आदित्ते विश्वे क्रतुं जुषन्त शुष्कायदेव जीवो जनिष्ठा।
भजन्त विश्वे देवत्वं नाम ऋतं सपन्तो अमृतमेवैः।।

ऋग्वेद १/६८/२

प्रस्तुत वेदमन्त्र में ज्ञान पूर्वक कर्मों से देवत्व प्राप्त कर मोक्ष मार्ग पर चलने की प्रेरणा की गई है। तपस्यारूप ब्रतादि, उपवास से हृदय निर्गत होकर प्रभु का प्रकाश मिलता है। प्रकर्यण्यता और प्रभु भति का अभाव मनुष्य को असुर बना देता है। ज्ञान पूर्वक क्रियाशीलता से शरीर वीरांग रहता है उसकी शक्ति स्थिर रहती है। हृदय में बुरे विचार उत्पन्न नहीं होते। इस प्रकार शरीर मन दोनों स्वस्थ रहते हैं। यज्ञादि उत्तम कर्मो का सेवन होता है जिससे देवत्व की प्राप्ति होती है।

हम ज्ञान व कर्म का विकास कर देवत्व प्राप्त करें और अमरता-मोक्ष की ओर बढ़ें।

आलस्य में निरन्तर निराशा रहती है।

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

सम्पादकीय.....

युवा पीढ़ी के लड़खड़ाते कदम

(दिशाहीन शिक्षा में दोषी हैं आप और हम)

समय बलवान् है, समय ऐसा ही चल रहा है, समय ही ऐसा आ गया, समय को देख जो नहीं बदला वह मूर्ख है। समय की पहिचान करना बुद्धिमानी है। कलियुग में यही होना था। कलियुग में सब सम्भव है। जमाना ही खराब है माँ-बाप क्या करें ?समय-समय पर इस प्रकार की चर्चा करते हुए आज सर्वत्र पुरानी पीढ़ी के लोगों को अपना पराया भाग्य कोसते देखा और सुना जा रहा है। प्रत्येक व्यक्ति निराशा के भाव लिए समय और जनता को दोषी बता रहा है। कारण कोई अन्य भी हो सकता है परन्तु स्वयंसिद्धम् अन्यसर्वसिद्धम्। मैं ठीक अन्य सब खराब हैं सुधार की भी कोई सम्भावना शेष नहीं है ऐसी बातों में प्रायः दूसरे साथियों को भी अपनी बात स्वीकार कराने के लिए पूरे जोर लगाये जाते है। इससे वातावरण प्रतिदिन कमजोर एवं प्रदूषित होता जा रहा है। पुराने समय से चली आ रही परम्पराओं में परिवर्तन हो रहे है। प्रत्येक क्षेत्र में प्राचीन संस्कृति के अभाव से पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव बढ़ रहा है। इसीलिए परिवार, समाज, राष्ट्र कमजोर होते जा रहे हैं। परिवारों में भाई-भाई के प्रति प्यार, विश्वास समाप्त हो गया। स्वार्थ हृदय में स्थाई भाव से कब्जा कर परोपकारी विचारों को ठहरने की अनुमति प्रदान नहीं करता। अतः प्रतिदिन विवाद ही आबाद हो रहे हैं। परिवार बरबाद हो रहे हैं। अपवाद है जहाँ वैदिक संस्कृति और सभ्यता जीवित है। शेष सब अपनी अर्थी सजाये बैठे हैं। उसे उठाने वाला भी कोई नहीं है। किसी भी समस्या को आप देखें तो पता चलता है कि इसमें भी कोई राजनीति करा रहा है। धर्मनीति से राष्ट्र को बनाने का और दुर्भाग्य से बचाने का स्वप्न निर्मूल हो रहे हैं। परिवार एक संगठन का प्रतीक है छोटे-बड़े, खरे-खोटे, वृद्ध-युवा सभी की भावनाओं के सम्मान को बढ़ाने का नाम परिवार है। उसकी परिभाषा काल-स्थान, भाव विशेष से घटती बढ़ती रहती है। एकाकी व्यक्ति भी अपने बच्चे के साथ रहने को परिवार की संज्ञा देता है। दस-बीस व्यक्तियों से लेकर परिवार को कितना भी बढ़ाया जा सकता है। हमारी वैदिक संस्कृति में तो ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' कहकर पूरी दुनियाँ को ही एक परिवार का रूप दे दिया। यह है महानता का सच्चा और सुन्दर उदाहरण। दुनियाँ में ओर कहीं नहीं हो सकता। इसीलिए इस देश को विश्व गुरु की उपाधि प्राप्त हुई तथा इस संस्कृति को वेद में कहा गया- ''सा संस्कृति प्रथमा विश्ववारा'' अर्थात् यह संस्कृति पूरी दुनियाँ में सबसे पुरानी है। यह उदारता कहाँ से आई?शिक्षा किसने दी ?महानता प्राप्त करने का सन्देश कैसे मिला?

अयंनिजः परोवा इति गणना लघुचेतसाम्।
उदार चरित्रानां तु वसुधा एवं कुटुम्बकम्।।

बारबार महान् बनने के लिए इसी प्रकार के संस्कार बच्चों में शिक्षा के रूप में संस्कारों के रूप में समय-समय पर पूर्वज देते रहे। उसका परिणाम सुखद रहा। आत्मीयता रही दूसरों की सेवा करने की भावना रही और वे बच्चे महान् बन गए। आज निराशा इसीलिए है कि प्रत्येक व्यक्ति समय को दोष दे रहा है और पुनरावृत्ति करते-करते गाय के बच्चे को बकरी बना दिया। घिसते-घिसते घोड़ा खरगोश बन गया है। अतः समय को दोष न देकर समय-समय पर सावधानी की आवश्यकता है। कलियुग को प्रारम्भ हुए ५१२२ वर्ष का समय हो गया है अभी चार लाख सत्ताईस हजार वर्ष और शेष हैं। इस कलियुग में ही स्वामी महर्षि दयानन्द जी आये। अकेले कितना कार्य कर गए। महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, गुरु गोविन्द सिंह, बन्दा वैरागी जैसे कितने वीर महापुरुष आये वे भी समय को कोसने लगते तो सच बताओं इस संस्कृति की रक्षा सम्भव थी ? कदापि नहीं। अतः ऐसा सोचना हमारे लिए सर्वधा हानिकारक है। आधुनिकता की दौड़ में अपनी सभ्यता और संस्कृति की रक्षा का ध्यान अवश्य रखो। आज पत्र-पत्रिकाओं में पढ़कर शर्म से सिर झुक जाता है जब सभी पवित्र रिश्ते दूषित हो गए। दूषित ही नहीं समाप्त हो गए। बेटा माँ को मार दे, माँ बेटे को मारकर नदी में बहा रही है। पिता-प्रभु, स्वामी-सेवक, भाई-बहिन सभी सम्बन्धों की स्थिति भयावह है। जहाँ वैदिक संस्कृति जीवित है आज वहाँ साक्षात् स्वर्ग है। मानवीय मूल्यों की सुरक्षा है और वही प्राचीन परम्परा है। अतः उसे जीवित करने के लिए, जीवित को शक्तिशाली बनाने के लिए एवं उसे स्थाई बनाने के लिए शिक्षा एवं संस्कारों को सुरक्षित करना होगा जो हमारी प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से ही सम्भव है। अतः समाज एवं राष्ट्र को शक्तिशाली बनाना है तो शिक्षा और संस्कार को सदैव सुरक्षित रखने का संकल्प लीजिये तभी आपका आपके परिवार का कल्याण सम्भव है। आर्य वीरदल इस दिशा में कुछ प्रयास कर रहा है। आपके घर जाकर आवाज देता है आओ अपने बच्चों को प्रतिदिन आर्य समाज मन्दिर की प्रातःकालीन अथवा सायंकालीन शाखाओं में भेजें, शिविरों में भेजें। घर पर प्रातःकाल उठकर स्वयं भी वैसा ही वातावरण बना सकते है। स्वामी रामदेव जी ने एक चमत्कार पैदा किया है- योगासन-प्राणायाम के प्रति रुचि पैदा की है। लोगों को स्वास्थ्य दिखा है। आलस्य को भगाया है। अब प्रत्येक व्यक्ति स्वयं में अनुशासित रहकर यह अनुभव करने लगा है कि मैं स्वस्थ हूँ। मुझे अब जीवन जीने की शैली प्राप्त हो गई है। जो इसे उपेक्षित कर रहे हैं वे स्वयं ही समाज से उपेक्षित हो रहे हैं। अतः आज के समय को पहिचानों, आज के समय को सावधानी से सदुपयोग में लगाओं, समय पर किया हुआ कार्य सदैव लाभकारी होता है, स्वादिष्ट भी होता है। समय पर चूक जाने वाला सदैव पश्चाताप करता है। समय के विषय में एक चित्रकार ने एक चित्र बनाया। व्यंगचित्र की तरह ही था। एक पक्षी और मनुष्य का रूप मिलाकर उसके पाँव के पास पंख लगे थे और उसका चेहरा आगे बालों से ढका हुआ था। पीछे से सिर गन्जा था। आजकल लोग आगे से गन्जे होते हैं। अतः लोगो ने प्रश्न किया कि यह चित्र रहस्यों भरा है। इसका अर्थ क्या है ?समझाओ। तब चित्रकार ने बताया कि यह समय का चित्र है। आगे बाल इसलिए हैं कि इसे समय से पहले सावधानीपूर्वक पकड़ लिया तो पकड़ में आ जायेगा अन्यथा बाद में सिर गंजा है कितना भी प्रयास कर लेना कुछ हाथ नहीं लगेगा। फिर बताया कि पंख हैं उड़ जाता है समय एक बार निकल जाने के बाद फिर हाथ नहीं आता। अतः सावधानी की आवश्यकता है निराशा से नहीं आशावान् होकर प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने कर्त्तव्य को समझकर उसे पूरा करने में लगेगा तो सभी कार्य ठीक होंगे और आप अपने जीवन के लक्ष्य को पूरा कर सकेंगे अथवा दूसरों पर ही दोषारोपण करते रहेंगे। यह जौलाई का महीना शिक्षा-सत्र का नववर्ष है अतः नवीनता का संचार हमारे सभी के हृदयों में हो ऐसी प्रभु से प्रार्थना है।

-सम्पादक

वैदिक विज्ञान की मान्यताएं-4

ब्राह्मण ग्रंथ वेद की वैज्ञानिक व्याख्या है इसी प्रकार उपनिषद आध्यात्मिक तथा स्मृति ग्रंथ वेद की सामाजिक व्याख्याएं है। शतपथ ब्राह्मण यजुर्वेद का सबसे प्राचीन वैज्ञानिक भाष्य है।

एक वर्ष में ऋतुओं का चक्र पूरा हो जाता है, इसे ही वैदिक विज्ञान की भाषा में संवतसर कहते हैं। छः ऋतुएं हैं। वैदिक विज्ञान की भाषा में इन्हें पितर कहते है क्योंकि अनेक प्रकार के वनस्पतियों तथा प्राणियों को ये ही जन्म देती है। सूर्य से आने वाली अग्नि को आदित्य कहते हैं। यह छः ऋतुओं में विभक्त हो जाता है। प्रत्येक ऋतु में अपने विशेष गुण धर्म होते हैं।

इसी प्रकार आदित्य १२ मास में विभक्त हो जाता है। इन १२ भागों में से प्रत्येक को कपाल कहते हैं तथा पूरे वर्ष में आदित्य के स्वरूप को पुराडोश कहते हैं। इसलिए आदित्य का पुराडोश बारह कपाल का होता है। ये बारह आदित्य द्यूलोक के देवता कहे जाते हैं।

इसी प्रकार वायु जो अन्तरिक्ष लोक का देवता है इसका पुराडोश ग्यारह कपाल का होता है। दस प्राण तथा ग्यारहवां आत्मा।

अग्नि का पुराडोश ग्यारह कपाल का होता है। क्योंकि वसु आठ होते हैं।

इसलिए वैदिक विज्ञान में ३३ दिव्य शक्तियां होती है। आठ वसु, ग्यारह रून्द्र तथा बारह आदित्य, इन्द्र तथा प्रजापति, ये ३३ देवता है। भूलोक के देवताओं को वसु, अंतरिक्ष लोक के देवताओं को रूद्र तथा द्यूलोक के देवताओं को आदित्य कहते हैं। वैदिक विज्ञान में प्राकृतिक शक्तियों को देवता कहते हैं।

वसु रून्द्र, आदित्य, पुराडोश, कपाल, देवता, पितर, संवत्सर ये सब वैदिक विज्ञान के पारिभाषिक शब्द है। इनमें स्वरूप को जाने बिना वैदिक विज्ञान को नहीं समझ सकते।

वैदिक विज्ञान का महत्वपूर्ण शब्द है द्रोण कलश। इसे अब कमण्डल कहते हैं जिसे सन्यासी लोग रखते हैं। यह अण्डाकार होता है। पृथ्वी सूर्य के चारो ओर एक अण्डाकार पथ में चक्कर काटती है। इसलिए पृथ्वी कभी सूर्य के निकट तथा कभी दूर चली जाती है। इसी से ऋतुएं बदलती है।इसीलिए शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है कि द्रोणकलश से ऋतुएं बदलती है।

शतपथ ब्राह्मण काण्ड ५, अध्याय१, ब्राह्मण ५ की प्रथम काण्ड में कहा गया है-

''जब दौड़ते हैं तो पृथ्वी लोक को जीत लेते है। जब ब्रह्मा नाभि तक उठे हुए चक्र पर चढ़कर सामगान करता है तो अन्तरिक्ष लोक को जीतता है। जब यूप को खड़ा करता है तो देवलोक को जीतता है। इसलिए तीन प्रकार का कृत्य किया जाता है।

''रथ अर्थात बस, कार आदि से दौड़कर पृथ्वी को जीतते हैं। ब्रह्म चक्र से अंतरिक्ष को जीतते हैं। ब्रह्म वैदिक विज्ञान में वायु को कहते हैं। ब्रह्म चक्र का अर्थ है वायु काटने वाला चक्र जिससे एक्सपेलर कहते हैं जो वायुयान के अग्रभाग में लगा रहता है जब यह तेजी से घूमता है तो एक प्रकार की ध्वनि उत्पन्न करता है जिसे सामगान कहते हैं। ये चक्र वही तक कार्य करता है जहां तक वायु मण्डल में वायु विद्यमान होती है। इससे ऊपर यूप (राकेट) कार्य करता है क्योंकि वह पीछे को धुँवा धकेलने के कारण आगे को दौड़ता है उसे वायु मण्डल की आवश्यकता नहीं होती।

द्यू लोक ब्रह्मांड का वो भाग होता है जो हमेशा सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित रहता है वहां वायुमण्डल नहीं होता।

''दौड़कर पृथ्वी को जीतते हैं। ब्रह्म चक्र से अंतरिक्ष लोक को जीतते है तथा यूप (राकेट) से द्यूलोक को जीतते हैं। शतपथ ब्राह्मण का यह कथन पूर्ण रूप से वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है।

वेदी- वैदिक विज्ञान में वेदी शब्द का प्रयोग होता है। वेदी क्या है?हमारा शरीर एक वेदी है इसमें अन्न रूपी आहुति डालते तो जीवन चलता रहता है। कार का इंजन एक वेदी है इसमें पेट्रोल की आहुति देते रहनेसे इंजन चलता रहता है। वेदी अनेक प्रकार की होती है तथा हवि (जिसकी आहुति दी जाती है) अनेक प्रकार की होती है। ये सब इंजीनियरिंक का विषय है।

यज्ञ- यज्ञ वैदिक विज्ञान में यज शब्द का उपयोग बार बार होता है। यज्ञ क्या हैं?ऋग्वेद में भूलोक पर पाये जाने वाली अग्नि आदि शक्तियों का विज्ञान है। यजुर्वेद में अंतरिक्ष में पायी जाने वाली शक्ति विद्युत आदि का विज्ञान है। सामवेद में द्यूलोक में पायी जाने वाली शक्ति सूर्य का विज्ञान है। इन शक्तियों का उपयोग जीवन को सुखी बनाने के लिए यंत्र आदि का विकास करना ही यज्ञ है। यज्ञ करना जीवन का श्रेष्ठतम् कार्य है।

शतपथ ब्राह्मण का प्रथम काण्ड हविर्यज्ञ है। हवि उस पदार्थ को कहते हैं जिसकी आहुति दी जाती है। हवि एक प्रकार का ईधन है। वैदिक विज्ञान की भाषा में इसे सोम कहते हैं। सोम अग्नि उपासक पदार्थ को कहते हैं।

विष्णु- भूलोक में विष्णु अग्नि के रूप में, अंतरिक्ष लोक में विद्युत के रूप में तथा द्यूलोक में सूर्य के रूप में रहता है। ये तीनों अग्नि के रूप हैं। इनको समवेत रूप से विष्णु कहते हैं।

सूर्य ताप एवं प्रकार देकर वस्तु तथा प्राणी को प्रेरित करता है। इसलिए वैदिक विज्ञान की भाषा में सूर्य को सविता कहते हैं।

ऋग्वेद में भूलोक का विज्ञान है इसके वैज्ञानिका होता कहते हैं।

यजुर्वेद में अंतरिक्ष लोक का विज्ञान है इसको वैज्ञानिक अध्वर्यु कहते हैं।

सामवेद में द्यू लोक का विज्ञान है। इसके वैज्ञानिक उद्‌गाता कहते हैं। चारो वेदों के विज्ञान का जानने वाले को ब्रह्मा कहते हैं।

कृपाल सिंह वर्मा
२५३, शिवलोक, कंकरखेड़ा
मेरठ- मो.- ६६२७८८७७८८

धरोहर.....

आर्य समाज के अमर बलिदानी

महात्मा भक्तफूलसिंह जी महाराज

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ.प्र., लखनऊ।

लम्बा कद, इकहरा शरीर, चौड़ा मस्तक, लम्बी दाढ़ी एवं जटायें अधोवस्त्र एवं उत्तरीय वस्त्र में सुशोभित, प्राचीन काल के ऋषि परम्परा के पोषक, वैदिक धर्म के उन्नायक, शुद्धि आन्दोलन के परिषिक्त, गुरुकुल प्रणाली के लिए समर्पित व्यक्तित्व, वैदिक जीवन धारा से आबाल वृद्ध को जीवन प्रदाता, दलितोद्धारक, दीन दुःखियों के सम्बल सदैव शूरवीर-दानवीर-कर्मवीर-धर्मवीर बनने के लिए लालायित स्वामी श्रद्धानन्द जी से पूर्ण रूपेण प्रभावित आशा से भावी पीढ़ी के निर्माणार्थ अहर्निश चिन्तित, सच्चे अर्थो में भक्त शब्द को सार्थक करने वाले, बिन्दु से विकास की चरम सीमा को पार करने वाले दृढ़ संकल्प के धनी, प्राणीमात्र की कल्याण कामना को सदैव संजीवनी बनकर जीवन प्रदाता के रूप में आर्य समाज को प्रभु प्रदत्त वरदान मिला था जो ऐसे घोर संकट काल में हनुमान की तरह अपनी ऊहा को परोपकारार्थ प्रदान करते रहे श्री भक्त फूलसिंह जी का नाम सुनते ही मन में उक्त चित्र उभर आता है आपके संस्मरण सुनाकर आर्य लोगों में भक्ति-शक्ति का भाव स्पष्ट देखने को मिल जाता है।

वर्ष १९६८ में गुरूकुल ततारपुर के वार्षिक सम्मेलन पर स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती (तत्कालीन भगवान देव जी आचार्य) ने प्रातः कालीन यज्ञ के पश्चात आपके जीवन की घटना सुनाकर यज्ञोपवीत प्रदान किये थे और तभी लोगों की बीड़ी-हुक्का-शराब छुड़वाने की प्रतिज्ञायें कराई थीं। तभी से उनके विषय में विशेष जानकारी प्राप्त करने की अभिलाषा जागृत हुई थी जो जैसा जाना उसे आपके समक्ष वर्णन करने की इच्छा से उपस्थित हूँ आशा है पढ़कर स्वयं तथा अन्यों को भी प्रेरणा प्रदान करेंगे मुझे भक्त फूलसिंह जी में स्वामी श्रद्धानन्द जी की समानता दिखाई देती है बाल्यकाल से लेकर जीवन दर्शन एवं अमर बलिदानी मृत्यु तक स्वामी श्रद्धानन्द जी के दर्शन अनुभव होते हैं महात्मा आनन्द स्वामी जी ने शंकर और दयानन्द पुस्तक लिखकर महर्षि दयानन्द जी सरस्वती से आचार्य शंकर की तुलना की है इसी प्रकार कोई विद्वान लेखक इस दिशा में प्रयास करके भक्त फूल सिंह और स्वामी श्रद्धानन्द नामक पुस्तक लिखी जा सकती है मैं तो संक्षेप से भावपूर्ण वृत्त से ही आपको परिचित कराने का सूक्ष्म प्रयास कर रहा हूँ।

आपका जन्म २४ फरवरी १८८५ को हरयाणा प्रान्त तत्कालीन पंजाब के अन्तर्गत वर्तमान सोनीपत जिले के माहरा ग्राम में चौ० बावरसिंह एवं माता तारावती के घर हुआ था। आप बाल्यकाल में तेजस्वी -प्रतापी वर्चस्वी-गुणवान् एवं बुद्धिमान् थे पढ़ने में कुशाग्रबुद्धि थे तथा धैर्यशाली - वीर तथा निर्भीक थे। ११ वर्ष की आयु के लगभग साथी बच्चों से आप कुसंग में पड़ गये और माता-पिता तथा गुरुजनों के लिए चिन्ता का कारण बने ग्राम से बाहर विद्यालय था अतः पूरा नियन्त्रण माता-पिता नहीं कर पाये पहले निकटस्थ ग्राम जूआँ में फिर ऐतिहासिक ग्राम महरौली में फिर खरखौदा में शिक्षा प्राप्त की मिडिलकक्षा तक पढ़ने के बाद पटवारी (लेखपाल) राजस्व विभाग की तैयारी करके उत्तीर्ण हो गए अध्ययन काल में भी आपकी निर्भीकता की कहानियाँ हैं साँप मारना- बड़े बच्चों की दादागिरी ठीक करना, अन्याय के विरूद्ध सदैव संघर्ष करना आपका स्वभाव बन गया था लेकिन पटवारी की परीक्षा उत्तीर्ण करके तो समझो जैसे आजकल पी.सी.एस. पास कर लिया हो क्योंकि जैसे डी.एम. जिलाधिकारी होता है वैसे ही पटवारी उस समय ग्रामस्तर पर जिलाधिकारी होता था ग्राम अधिकारी तो आज भी रहता है। २० वर्ष की आयु में रोहतक जिले के खण्डा ग्राम में श्रीमती धूपकौर के साथ विवाह सम्पन्न हुआ राजस्व विभाग में आपको नियुक्ति मिली सर्वप्रथम सीख पाथरी ग्राम जिला करनाल में आपने पटवारी पद सम्भाला काम करने की आपकी प्रवृत्ति से सभी प्रभावित हुए सभी ग्रामवासी आपका सम्मान करते थे। लेकिन आपके दुर्गुण की प्रवृत्ति के प्रति अच्छे भाव नहीं थे आपकी मित्र मण्डली भी इस बात पर चिन्तित रहने लगी कि इन्हें कैसे सुधारा जाये, यदि यह व्यक्ति शराब पीना छोड़ दे तो समाज के लिए अधिक लाभकारी हो सकते हैं चाह को मिल जाती राह आर्य समाज का प्रचार प्रसार पंजाब में प्रभावी हो चुका था और आर्य समाज के सभी अधिकारी/सदस्य पवित्र जीवन एवं दृढ़ संकल्पी वैदिक सिद्धान्तों के लिए समर्पित रहते थे प्रत्येक बुराई के सुधार के लिए प्रयासरत रहते थे आर्य समाज का स्वर्णकाल था ऐसी मित्र मण्डली में आर्य समाज से प्रभावित सदस्य भी थे।

आर्य समाज पानीपत से जुड़े प्रीतसिंह पटवारी मुख्य थे उन्हें ही श्रेय जाता है जो उन्हें सन्मार्ग पर प्रेरित करने के लिए आर्य समाज में प्रविष्ट किया उन्होंने एक दिन योजना बनाई कि फूलसिंह पटवारी को आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में ले जाकर यज्ञोपवीत संस्कार कराया जाये फिर यह विशिष्ट उपहार वरदान बन जायेगा। ऐसा सोचकर श्री प्रीतसिंह पटवारी जी ने कहा कि चलो आर्य समाज के सत्संग में चलते हैं प्रारम्भ में तो मना किया लेकिन मित्र सम्मित उपदेश मीठा प्रसाद होता है वे आर्य समाज में जाकर यज्ञशाला में जाकर बैठ गये यज्ञ प्रारम्भ हुआ और आचमन के पश्चात् पीछे से उनके गले में यज्ञोपवीत पहना दिया यज्ञोपरान्त स्वामी ब्रह्मनन्द जी सरस्वती द्वारा उपदेश में नियम बताये गये उन नियमों के पालन में ही कायाकल्प हो गया स्वाध्याय से और बल मिला सत्यार्थ प्रकाश एवं भजनसंग्रह सिद्धान्त आदि-आदि पुस्तकें पढ़ने के बाद क्रान्तिकारी परिवर्तन आया और जीवन के समस्त दोष नष्ट करके स्वर्णरूपी जीवन को कुन्दन बना दिया दिनचर्या, भोजन, व्यवहार में परिवर्तन हुआ - १. शुद्ध आहार २. शुद्ध आचार ३. शुद्ध व्यवहार ईश्वर भक्ति और सात्विकता से आपको भगत जी कहने लगे और इसी आधार पर आपका नाम भक्तफूल सिंह पटवारी प्रसिद्ध हो गया जो जीवन के अन्तिम क्षणों तक सार्थक करते हुए तपस्या की भट्टी में तपाया, विषय परिस्थितियाँ आने पर भी हिम्मत नहीं हारी जीवन की प्रेरक घटनायें संक्षेप से देने का लोभ संवरण नहीं कर पा रहा हूँ। आपने प्रातः-सायं सन्ध्या-ध्यान का नियम अनिवार्य किया और आत्मचिन्तन द्वारा निश्चय किया कि जब तक आध्यात्मिक ऊर्जा नहीं बढ़ेगी तब तक साधना सफल नहीं होगी उसके लिए आन्यन्तर शुद्धि अनिवार्य है। इस संकल्प को आपने जीवन का अधिकरण बनाकर खान-पान की पवित्रता चरित्र की पवित्रता, साधना-स्वाध्याय से व्यवहार की कुशलता और अपने कर्त्तव्य पथ पर चलते हुए ग्राम में आबाल वृद्ध की उन्नति हेतु अभियान प्रारम्भ किये आपका आत्मबल इतना बढ़ गया था कि आप संकल्पित कार्य को पूरा कराने के लिए ग्राम के सभी अधिकारियों को एवं प्रबुद्ध जनमानस को अपने साथ जोड़कर चलने का सामर्थ्य प्राप्त कर लेते थे।

चरित्र निर्माण के लिए आपके मन में भाव जागृत हुए कि मुझे बच्चों का एक गुरूकुल बनाना चाहिये उसके लिए स्थान चयनित कर लिया और भूमि भी देख ली परामर्श किया तो वह भूमि कई जमींदारों की शामिल खाता थी कुछ सहमत हो कुछ नहीं हुए बस धुन के धनी आत्मबली ने अनशन प्रारम्भ कर दिया कि जब तक भूमि प्राप्त नहीं होगी अन्न-जल ग्रहण नहीं करूंगा कई दिनों के पश्चात आपके प्रति लोगों की आत्मीयता बढ़ी और आपके निर्देशानुसार भूमि प्रदान कर दी। यह सच्चे आर्यमनीषी की विजय थी समाज सेवा का कार्य शिक्षा से जुड़ गया और सेवा का स्तर भी बढ़ गया।

एक बार गुरूकुल काँगड़ी के उत्सव पर मित्रों सहित गए स्वामी श्रद्धानन्द जी के मधुर उपदेश उनके जीवन में नींव के पत्थर बन गए वहीं से आप आर्य समाज के दीवाने बन गए दिन रात पटवारी के कार्य के साथ-साथ वेद प्रचार एवं समाज सुधार कार्य भी चलता रहता था। सन् १९०६ में सारे भारत में प्लेग की बीमारी फैल गई लोग घर छोड़कर ग्राम छोड़कर जाने लगे हा-हाकार मच गया सरकारी अधिकारी भी छुट्टी लेकर अपने परिवार के बहाने घर चले गए ऐसे विकट समय में आर्य समाज के उपदेशकों तथा अधिकारी कार्यकर्त्ता ने सेवा का संकल्प लिया और मरते लोगों के प्राण बचाये ठीक होने पर लोगों ने आर्य समाज का सदैव उपकार माना भक्त फूल सिंह जी ने भी अपने क्षेत्र में लोगों का आशीर्वाद प्राप्त कर आत्मीयता से वेद प्रचार कार्य किया।

वेद प्रचार में उपदेशों का इतना लाभ हुआ कि आपने रिश्वत लेना छोड़ दिया जिनसे ली थी उसे वापस कर दिया थानेदार ने रिश्वत ली थी उससे वापस दिलवाई आत्मशोधन के लिए इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है ऐसे पवित्र हृदय के व्यक्तित्व बन गए थे भक्त फूलसिंह जी समाज सेवा कार्य में अधिक समय देने से नौकरी में पूरा समय नहीं दे पाते थे अतः त्यागपत्र दे दिया अधिकारियों ने मना किया कि आप कार्य करते रहे और समाज सेवा भी आपको यह स्वीकार नहीं था अतः १९१६ में अपना समस्त चार्ज बरकत अली नाम के पटवारी को सौंप दिया। सम्भल का ग्राम में गोहत्या के लिए स्थान मुसलमानों ने बना लिया सरकार ने अनुमति दे दी आपने क्षेत्र के लोगों को एकत्रित किया और उसके विरूद्ध आन्दोलन कर दिया क्रुद्ध जनता को शान्त किया और बूचड़खाना बन्द करा दिया। लोगों ने आपके प्रति कृतज्ञताव्यक्त की -

इरादे जब पाक होते हैं, सफलता चलकर आती है।
चट्टाने थर थराती हैं और समुद्र रास्ता देते हैं।।

इस घटना से आपकी छवि समाजसेवी नेता के रूप में प्रसिद्ध हो गई लेकिन विरोधियों ने सरकार के समक्ष प्रस्तुत किया कि यह षड़यन्त्र सरकार पलटने का था अतः इसे देशद्रोह में बन्द किया जाये मुकादमा चला चौ० छोटूराम जी ने केश लड़ा और आपको निर्दोष सिद्धकर विजय प्राप्त की।

गुरुकुल की स्थापना - ग्राम भैंसवाल में गुरुकुल खोलने की योजना लोगों ने आपकी तपस्या - साधना दृढ़ संकल्प देखकर कहा कि हम भूमि के साथ पैसे भी देगें, सर्वत्र चर्चा का विषय हो गया और १५० बीघा जमीन पर १९१६ में गुरूकुल का शिलान्यास स्वामी श्रद्धानन्द जी के कर कमलों द्वारा सम्पन्न

शेष पृष्ठ.........७

शरीर छोड़ने के पश्चात् जीव के शरीर धारण करने की प्रक्रियाएँ

-ओम प्रकाश आर्य

यह सभी की जिज्ञासा रहती है कि शरीर छोड़ने के पश्चात् जीव कहाँ जाता है?कुछ लोग पुनर्जन्म मानते ही नहीं हैं किन्तु वैदिक विचारधारा पुनर्जन्म को मानती है। जीव नया शरीर धारण करता है। उसे नए शरीर की प्राप्ति उसके कर्मफलानुसार होती है। ऐसा वैदिक सिद्धान्त है। यहाँ हम जिस विषय का उल्लेख करना चाहते हैं वह है शरीर छोड़ने के पश्चात् जीव के शरीर धारण करने की प्रक्रियाएँ। महर्षि दयानन्द सरस्वती यजुर्वेद के ३९वें अध्याय के छठे मंत्र के भााष्य में लिखते हैं -

सविता
प्रथमेऽहन्नग्निर्द्वितीये
वायुस्तृतीयेऽआदित्यश्चतुर्थे
चन्द्रमाः पञ्चमऽऋतुः षष्ठे
मरुतः सप्तमे
बृहस्पतिरष्टमे
मित्रो नवमे वरुणो
दशमऽइन्द्रऽएकादशे विश्वे
देवाः द्वादशे।।

पदार्थ- ''हे मनुष्यों! इस जीव को (प्रथमे) शरीर छोड़ने के पहिले (अहन्) दिन (सविता) सूर्य (द्वितीय) दूसरे दिन (अग्निः) अग्नि (तृतीये) तीसरे (वायुः) वायु (चतुर्थे) चौथे (आदित्यः) महीना (पञ्चमे) पाँचवें (चन्द्रमाः) चन्द्रमा (षष्ठे) छठे (ऋतुः) वसन्तादि ऋतु (सप्तमे) सातवें (मरुतः) मनुष्यादि प्राणी (अष्टमे) आठवें (बृहस्पतिः) बड़ों का रक्षक सूत्रात्मा वायु (नवमे) नवमे में (मित्रः) प्राण (दशमे) दशवें में (वरुणः) उदान (एकादशे) ग्यारहवें में (इन्द्रः) बिजुली और (द्वादशे) बारहवें दिन (विश्वे) सब (देवाः) दिव्य उत्तम गुण प्राप्त होते हैं।''

भावार्थ- ''हे मनुष्यो! जब ये जीव शरीर को छोड़ते हैं तब सूर्य प्रकाश आदि पदार्थों को प्राप्त होकर कुछ काल भ्रमण कर अपने कर्मों के अनुकूल गर्भाशय को प्राप्त हो शरीर धारण कर उत्पन्न होते हैं तभी पुण्य-पाप कर्म से सुख-दुःख रूप फलों को भोगते हैं।''

शरीर छोड़ने के पश्चात् जीव कुछ काल तक भ्रमण करता है। भ्रमण के उपरान्त वह गर्भ में आता है। ऐसा नहीं है कि वह सीधे माता के गर्भ में प्रवेश कर जाता है। वास्तव में जीव को पुनः शरीर धारण करने के लिए विभिन्न प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है। उसे शरीर धारण करने का कोई माध्यम चाहिए। वे माध्यम हैं सूर्यादि। कुल मिलाकर बारह माध्यमों का संकेत है। इसी को लोकव्यवहार में अनभिज्ञतावश बारहीं कहते हैं। बारह प्रक्रियाओं के पश्चात् कर्मानुसार जीव गर्भ को प्राप्त कर लेता है। इस प्रक्रिया को लोक में कर्मकांड में परिणत करके मृतकभोज के रूप में परम्परा बना डाली। यह सब अर्थ का अनर्थ होने के कारण हुआ। कहीं पर बारह दिन पर, कहीं पर तेरह दिन पर और कहीं पर सोहलहवें दिन मृतकभोज परम्परा चलती है। इसमें विभिन्न कर्मकांड भी कराए जाते हैं। ये सारे कर्मकांड अवैदिक हैं। वेद में कहीं ऐसा कर्मकांड करने को नहीं लिखा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इनका खंडन किया है। दाहक्रिया के पश्चात् तीसरे दिन अस्थिसंचयन का उल्लेख एवं उसके बाद घर में यज्ञ करके सब कार्यक्रम समाप्त करने का वर्णन करते हैं। यज्ञ इसलिए आवश्यक है जिससे कि मृतक के घर का वातावरण शुद्ध हो जाए। महर्षि दयानन्द के शब्दों में, ''दाहकर्म और अस्थिसंचयन से पृथक् मृतक के लिए दूसरा कोई भी कर्म कर्त्तव्य नहीं है। हाँ, यदि वह सम्पन्न हो तो अपने जीते जी वा मरे पीछे उसके सम्बन्धी वेदविद्या, वेदोक्तधर्म का प्रचार, अनाथपालन, वेदोक्त धर्मोपदेश की प्रवृत्ति के लिए चाहे जितना धन प्रदान करें, बहुत अच्छी बात है।'' - संस्कार विधि।

भावार्थ- ''हे मनुष्यो! जब ये जीव शरीर को छोड़ते हैं तब सूर्य प्रकाश आदि पदार्थों को प्राप्त होकर कुछ काल भ्रमण कर अपने कर्मों के अनुकूल गर्भाशय को प्राप्त हो शरीर धारण कर उत्पन्न होते हैं तभी पुण्य-पाप कर्म से सुख-दुःख रूप फलों को भोगते हैं।''

अब इन बारहों प्रक्रियाओं पर थोड़ा सा प्रकाश डालकर विषय को स्पष्ट करते हैं। जीव मृत्यु के उपरान्त पहले दिन सूर्य में जाता है। सूर्य की किरणों के माध्यम से उसकी गति होती है। उन्हीं के सहारे वह गति करता है। यदि किसी कि मृत्यु रात्रि में हुई तो?माध्यम तो सूर्य की किरणें ही होंगी। वैसे भी सूर्य कभी अस्त होता ही नहीं है। जब भारत में रात होती है तब अमेरिका में दिन होता है। सूर्य तो सदैव एक जैसे चमकता है। दूसरे दिन अग्नि माध्यम बनता है। हम सभी जानते हैं कि अग्नि एक ऊर्जा है। यह ऊर्जा जड़-चेतन सर्वत्र है। ऊर्जा के द्वारा गति मिलती है। जैसे-वाष्प के द्वारा छोटे-छोटे कण भी ऊपर उठते हैं। केतली में वह ऊर्जा ढक्कन को ऊपर उठा देती है। उसी प्रकार जीव भी अग्नि ऊर्जा को प्राप्त करके आगे बढ़ता है। तीसरे दिन वह वायु को प्राप्त करता है। वायु का आश्रय ग्रहण करके अगली प्रक्रिया में जाता है। वायु प्रसारण का काम करती है। गति देती है। पुष्पों में परागण भी वायु के द्वारा होता है। वास्तव में ये सब अति सूक्ष्म ईश्वरीय व्यवस्थाएँ हैं। यह कैसे होता है?इसे जानना असंभव है। वेदमंत्र के संकेत को हम थोड़ा-थोड़ा-सा समझने का प्रयत्न करें। इस संकेत के द्वारा एक अनुमान लगाया जा सकता है। चौथे दिन जीव महीना में जाता है। महीना क्या करता होगा?उसका जीव के साथ कैसे सम्बन्ध बैठता है?हम सभी जानते हैं कि हर बीज हर मौसम में नहीं उगता। उसके लिए उपयुक्त जलवायु चाहिए। हवा, गर्मी प्रकाश चाहिए। तभी वह प्रस्फुटित होगा। चैत्र वर्ष का प्रथम महीना है। ये महीने प्रत्येक प्राणी की आयु की गणना करते हैं। जीव का महीना में जाने का तात्पर्य यह है कि वह किस आयु वाले योनि में जाएगा। उसके कर्मफल उसे किस आयु वाले शरीर को प्राप्त कराएँगे यह सब ईश्वर के अलावा कोई नहीं जान सकता। महीना आयु तय करता है। पाँचवें दिन चन्द्रमा को जाता है। जिस प्रकार पहले दिन सूर्य की किरणों का आश्रय पाकर जीव आगे बढ़ता है उसी प्रकार वह पाँचवें दिन चन्द्रमा की रश्मियों का आश्रम ग्रहण करता है। चन्द्रमा की रश्मियाँ औषधि का काम करती हैं।

आप सभी जानते हैं कि कुमुदिनी दिन में नहीं खिलती। वह रात में चन्द्ररश्मियों को प्राप्त करके खिलती है। कहीं-न-कहीं वे रश्मियाँ उसे प्रभावित करती हैं। जीव भी उनसे प्रभावित होकर आगे की योनि की ओर गति करता है। छठवें दिन वसन्त आदि ऋतु को प्राप्त करता है। ऋतु और जीव का क्या सम्बन्ध है?प्रकृति में हम देखते हैं कि वृक्ष-वनस्पतियाँ मौसम के अनुसार ही उगती हैं, फलती-फूलती हैं। मनुष्य ऋतु के अनुकूल पदार्थों को खाकर स्वस्थ रहता है। बिना मौसम की चीजें खाने से वह बीमार पड़ जाता है। खाने की चीजें ऋतु के अनुकूल ही सेवन करने योग्य होती हैं। हो सकता है कि जीव ऋतु के अनुकूल खाद्य-पदार्थों में जाकर प्राणी के शरीर में जाता हो और उससे वह गर्भाशय को प्राप्त करता हो। इससे सिद्ध हो रहा है कि खाद्य-पदार्थों के माध्यम से जीव वीर्य में जाकर गर्भ को प्राप्त करता है। तत्पश्चात् वह सातवें दिन मनुष्य या अन्य प्राणी की योनि में ईश्वरीय व्यवस्था के अनुसार कर्मफलानुसार जाता है। यह वह अवस्था है जब जीव की योनि निश्चित होती है। उसका योनि आवास तय होता है कि उसे इसी आवास में रहना है। उसके कर्मफल उसको उसी ओर ले जाते हैं। आठवें दिन जीव सूत्रात्मा वायु को प्राप्त करता है। सूत्रात्मा वायु वह वायु है जो सूक्ष्म प्रकृति के कार्य पंचतन्मात्र के बीच होती है। उसी वायु से योगी परमात्मा का साक्षात्कार करता है। वही वायु सबको धारण करती है। पंचतत्त्व हैं-पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और आकाश। ये पाँचों तत्त्व प्रकृति के रूप में हम देखते हैं। इनका सूक्ष्मरूप पंचतन्मात्र है जिनसे ये पाँचों भौतिक तत्त्व उत्पन्न हुए। सूत्रात्मा वायु इन सबको धारण करती है। इसी कारण इसको रक्षक कहा गया है। यह जीव की गति के लिए क्या करती होगी? वह जीव को धारण करने में मदद करती होगी, आश्रय देती होगी। जीव को आश्रय तो चाहिए ही, अन्यथा वह स्थिर कैसे हो पाएगा। स्थिरता प्रदान कर वह जीव को उदान वायु में भेज देती है। जीव दशवें दिन उदान वायु को प्राप्त कर वह जीव को उदान वायु शरीर में वमन को बाहर फेंकता है। संगीत स्वर को व्यक्त करता है। यह वायु जीव को आगे जाने में मदद करती है। इसी से जीव अगली योनि के निकट पहुँचता है। ग्यारहवें दिन वह जीव बिजुली को प्राप्त करता है जिसे इन्द्र कहा गया है। बिजुली अर्थात् विद्युत । यह विद्युत तत्त्व जीव को शरीर धारण कराने में क्या सहयोग करता होगा?वास्तव में यह भी ऊर्जा है। ऊर्जा सं संचरण होता है। जब तक शरीर में ऊर्जा है तभी तक वह चलता है। इसकी कमी से शरीर शिथिल हो जाता है। विद्युत भी जीव को योनि प्राप्ति में सहायता करता है। उसे कर्मानुसार शरीर-धारण प्रक्रिया में मदद करके गर्भस्थ बनाता है। बारहवें दिन जीव सब दिव्य उत्तम गुण प्राप्त कर लेता है। यह दिव्य उत्तम गुण क्या है ?इसका तात्पर्य यह है कि इस अवस्था में आकर जीव गर्भाशय में स्थिर हो जाता है। गर्भाशय में जीव का स्थिर हो जाना ही दिव्य उत्तम गुण प्राप्त करना है। जीव के शरीर धारण करने की प्रक्रिया में यह अंतिम प्रक्रिया है। यहीं आकर वह स्थिर हो जाता है। वह भौतिक शरीर के साथ गर्भाशय से बाहर आने के लिए एक निश्चित समय का इन्तजार करता है तत्पश्चात वह धरती पर दिखलाई पड़ जाता है।

पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु एवं उनका अप्राप्य व अप्रकाशित यजुर्वेद भाष्य विवरण

-मनमोहन कुमार आर्य

आचार्य पं. ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु जी महर्षि दयानन्द जी के प्रमुख अनुयायियों में से एक थे। उनका सारा जीवन संस्कृत भाषा की आर्ष व्याकरण के पठन पाठन व प्रचार सहित महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज के वेद प्रचार एवं शुद्धि आदि कार्यो को समर्पित रहा। उनके अनेक कार्यो में से एक प्रसिद्ध एवं दुष्कर कार्य महर्षि दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य पर विवरण नामक एक विस्तृत वैदुष्यपूर्ण टीका भी है। श्रद्धेय जिज्ञासु जी इस कार्य में अनेक आर्य विद्वानों, रामलाल कपूर ट्रस्ट के अधिकारियों की प्रेरणा व स्वात्म प्रेरणा से प्रवृत्त हुए थे। इस कार्य में आपको कितना तप करना पड़ा इसका अनुमान आज के लेखक व विद्वान शायद ही लगा सके। इतना ही अनुभव होता है कि आर्य समाज में ऐसे विद्वानों व उनके विद्वतापूर्ण कार्य का मूल्यांकन एवं सम्मान करने वाले लोग बहुत पहले ही कम व समाप्त हो गये थे और आज भी स्थिति वैसी ही है या उससे भी कुछ निम्नतर है।

आचार्यप्रवर पं. ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु जी का यजुर्वेद भाष्य विवरण का पहला भाग सन् १६४४ में रामलाल कपूर ट्रस्ट लाहौर की ओर से प्रकाशित हुआ था। १४ अगस्त १६४७ को भारत का विभाजन होने के कारण लाहौर में इस ग्रंथ की सभी प्रतियां नष्ट हो गई थी। उसके बाद ट्रस्ट को अमृतसर में स्थापित किया गया और इस नष्ट हुए ग्रंथ का प्रथम भाग का दूसरा संस्करण सन् १६५६ में प्रकाशित हुआ। इसमें यजुर्वेद के महर्षि दयानन्द के दस अध्यायों पर्यन्त तक का भाष्य व उसका विवरण सम्मिलित था। इसे ऋषि के यजुर्वेद भाष्य सर्वशुद्ध संस्करण कह सकते हैं जो अनेक विशेषताओं से युक्त है। इसकी विशिष्टता के कारण ही पं. युधिष्ठर मीमांसक जैसे विद्वान इसके सम्पादन के कार्य में प्रवृत्त हुए थे। इस प्रथम भाग का तीसरा संस्करण सितम्बर १६८४ में प्रकाशित हुआ जो वर्तमान समय तक प्रचलित है। आज दिनांक १ अप्रैल २०१६ को ट्रस्ट में फोन करने पर ज्ञात हुआ कि यह संस्करण भी समाप्त हो गया है और अब बिक्री के लिए इसकी व दूसरे भाग की कोई प्रति उपलब्ध नहीं है। इस यजुर्वेद भाष्य के विवरण का दूसरे भाग के प्रथम संस्करण एक हजार प्रतियों में सन् १६७१ में पं. युधिष्ठिर मीमांसक महामहोपाध्याय के सम्पादकत्व में प्रकाशित हुआ था। यजुर्वेद के शेष १६ से ४० अध्याय तक का विवरण सद्यः प्रकाशित नहीं हुआ है। इस सम्बन्ध में दूसरेभाग के सम्पादक और पं.जिज्ञासु जी के साक्षात शिष्य पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया है जिसे उपयोगी जानकर प्रस्तुत कर रहे है। वह लिखते है कि अध्याय १६ से ४० तक के यजुर्वेदभाष्य के ६०० पृष्ठों के तीन-तीन भाग बनेंगे वर्तमान मंहगाई के अनुसार हमें इन तीन भागों के लिए तीस हजार रूपये व्यय करना होगा। नित्य प्रति बढ़ती हुई मंहगाई के कारण मुद्रण व्यय तीस हजार रूपये से अधिक ही बढ़ेगा कम न होगा।

पं. युधिष्ठिर मीमासक जी ने शेष तीन भागों के प्रकाशन के लिए सहायता की अपील की। उन्होंने लिखा कि इन तीन भागों के प्रकाशन के लिए वर्तमान अवस्था में ट्रस्ट के लिए तीस हजार रूपया व्यय करना कठिन होगा। ट्रस्ट का प्रकाशन कार्य अधिकतर लागत मूल्य पर होता है। कुछ पुस्तकों को प्रचारार्थ लागत से भी कम मूल्य पर प्रकाशित किया जाता है। ट्रस्ट का सम्पूर्ण धन प्रकाशन कार्य पर लग चुका है। अतः इस ग्रंथ के शेष भागों के लिए तीस हजार रूपया व्यय करना ट्रस्ट के सामर्थ्य के बाहर है। यह कार्य तभी संभव हो सकता है जब धनी मानी वैदिक धर्मप्रेमी इन भागों को प्रकाशित करने के लिए प्रतिभाग १०००० रूपये का सहयोग प्रदान करें। वैदिक धर्मप्रेमियों, पूज्य गुरूवर के भक्तों और सुहृदजनों के सहयोग से ही श्री पूज्य गुरूवर का यह अधूरा कार्य प्रकाशित हो सकता है। यदि कोई वेदप्रेमी भी आर्यजन तृतीय भाग के लिये सहयोग प्रदान करे तो हम तृतीय भाग भी वि. २०२६ के मध्य तक प्रकाशित कर सकते हैं। हमारी इच्छा तो यह है कि आर्य समाज स्थापना शताब्दी वर्ष मार्च १६७५ तक शेष तीनों भाग प्रकाशित कर दे, परंतु बिना आर्थिक सहयोग के यह कार्य पूर्ण होना कठिन है।

पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी की इस मार्मिक अपील को ४५ वर्ष व्यतीत हो गये परंतु दुख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि यह गूंगे व बहरे लोगों से की गई अपील सिद्ध हुई है जिसमें हम भी सम्मिलित है। आर्य समाज ने सन् १६७१ से बड़े बड़े राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के दिखावों व मुकदमेबाजी पर भी अरबो करोड़ोरूपये व्यय किए है। इसके अतिरिक्त आर्य समाज को दान में प्राप्त सम्पत्ति के क्रय विक्रय में भी कहीं कहीं अनियमिततायें होती सुनी जाती है परंतु महर्षि दयानन्द से जुड़े इस यजुर्वेद भाष्य के कार्य और उस पर उनके एक अति योग्य भक्त पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी द्वारा शोध व अनुसंधान से युक्त महत्वपूर्ण कार्य जिस पर जिज्ञासु जी के जीवन का बहुत बड़ा भाग व कठोर तपलगा वह पूरा कार्य आर्य जनता तक अभी तक नहीं पहुंच सका। वेदों में आता है कि ब्राह्मण की गो अर्थात् वाणी की हत्या मत करो। यहां हमें लगता है कि हमने ट्रस्ट में पता किया तो ज्ञात हुआ कि वहां इन तीन भागों की पाण्डुलिपियों के बारे में हमने ट्रस्ट में पता किया तो ज्ञात हुआ कि वहां इन तीनों भागों की पाण्डुलिपियां उपलब्ध नहीं है। हो सकता है कि वह लोवाकलां के कन्या गुरूकुल में उपलब्ध हो जहां मीमांसक जी ने अपनी पुस्तकें व पाण्डुलिपियां आदि प्रदान की थी। हमें आर्य जगत में जिज्ञासु जी के इन अलभ्य ग्रंथों के प्रकाशन कार्य के प्रति रूचि नहीं दिखती। हमारे प्रकाशन व अन्य कार्य जनता से दान में प्राप्त धन से होते है परंतु उससे भी प्रायः वहीं ग्रंथ प्रकाशित करते हैं जो साधारण जनता पसन्द करती है या प्रकाशक जिसे पसन्द करता है। विद्वानों के इस प्रकार के महत्वपूर्ण ग्रंथ का प्रकाशन न हो पाने की स्थिति व अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथों का एक बार प्रकाशन होने के बाद पुनः प्रकाशन न होने की स्थिति दुखदायी व चिन्तनीय है।

इसके साथ ही हम यहां यजुर्वेद भाष्य पर आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली द्वारा वर्षो पूर्व आचार्य सुदर्शन देव जी के सम्पादन में प्रकाशित ''यजुर्वेद भाष्य भास्कर'' और ''यजुर्वेद भाष्य भाषानुवाद'' टीकाओं पर भी कुछ निवेदन करना चाहते हैं। यजुर्वेद भाष्य भास्कर टीका चार भागों में प्रकाशित हुई थी तथा यजुर्वेद भाष्य भाषानुवाद टीका दो भागों में। यह दोनों अत्युत्तम व महत्वपूर्ण ग्रंथ विगत १०-१५ वर्षो व उससे भी अधिक समय से अप्राप्य है। इनके भविष्य में प्रकाशन विषयक कोई जानकारी व संभावना नहीं है। यह कार्य ऐसा था जिससे लाला दीपचन्द जी आर्य अमरत्व को प्राप्त है। इन अप्राप्य टीकाओं का ट्रस्ट, परोपकारिणी व अन्य किसी सभा अथवा अन्य किसी प्रकाशक को प्रकाशन करना चाहिए था परंतु इस ओर किसी का ध्यान नहीं गया। दूसरा कारण धनाभाव भी हो सकता है। फलतः स्वाध्यायशील पाठक इन महत्वपूर्ण ग्रंथों से वंचित है। इस विषय में हमने पहले भी एक लेख द्वारा निवेदन किया था परंतु आर्य समाज में स्थिति यह है कि शायद ही कोई ऐसे लेखों को पढ़े या देखें। इस वर्तमान लेख की भी यही स्थिति होनी है। जो भी हो हमने अपने ज्ञान के अनुसार जो उचित लगा किया है। ऋषि ने देश व विश्व के कल्याणार्थ चाहा था कि देश व संसार वैदिक सिद्धान्तों को जाने व स्वीकार करें परंतु उनके प्रयत्नों का क्या व कितना प्रभाव हुआ यह हमारे सामने हैं। शायद ही देश व विश्व में कुछ परिवार होंगे जहां आर्य समाज के सभी सिद्धान्तों का उनकी मूल भावना के अनुरूप पालन होता हो?यह भी लिख देते हैं कि प्रमुख ग्रंथों के प्रकाशन में मुख्य बाधा आर्यजनों या ऋषि भक्तों में स्वाध्याय की प्रवृत्ति का कम व न होना मुख्य है। जब ग्रंथ पर्याप्त संख्या में बिकेंगे ही नहीं तो प्रकाशक उन पर अपना धन व्यय कर प्रकाशित ही क्यों करेगे?अधिकांश ग्रंथों के प्रकाशित व पुनः प्रकाशित न होने का यही मुख्य कारण है। हमारा यह भी प्रस्ताव है कि सभी आर्य समाज व सभाओं को अपने बजट का लगभग १५ प्रतिशत भाग महर्षि दयानन्द के ग्रंथों के प्रमाणिक संस्करणों व अन्य प्रमुख ग्रंथों के प्रकाशन व अन्य प्रकाशकों को प्रकाशन में सहायता देने में व्यय करना चाहिए।

अधिक विस्तार न कर हम आर्य समाज के नेताओं व विद्वानों का ध्यान इस ओर दिलाना चाहते हैं।

शेष ईश्वर की इच्छा!

१६६, चुक्खूवाला-२
देहरादून

गुरूकुल महाविद्यालय पूठ

गढ़मुक्तेश्वर, हापुड़ (उ.प्र.)

प्रवेशार्थ सूचना

गंगा किनारे शान्त प्रकृति के वातावरण में स्थित गुरूकुल पूठ में प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। सं.वि.वि. वाराणसी से शास्त्री आचार्य तक मान्यता प्राप्त एवं उ.प्र.मा.शि.परिषद लखनऊ से मध्यमा (१२) तक मान्यता प्राप्त तथा सुन्दर दिनचर्या धनुर्विद्या का विशेष प्रशिक्षण योगासन, प्राणायाम आर्यवीर दल का व्यायाम प्रशिक्षण अनिवार्य रूप से प्रदान किया जाता है। प्राचीन एवं आधुनिक शिक्षा की भी सुन्दर व्यवस्था है। अपने बच्चों को देश भक्त गुरू भक्त, मातृ-पितृ भक्त बनाने के लिए आज ही संकल्प लेकर शीघ्र संपर्क करें। स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी महाराज की साधना स्थली पर आपका हार्दिक स्वागत है। गढ़ मुक्तेश्वर से पूठ जाने के लिए बस व्यवस्था है।

दिनेश आचार्य	**धर्मेश्वरानन्द सरस्वती**	**राजीव आचार्य**
कार्यालयाध्यक्ष	संचालक	प्राचार्य
मो. ९४११०२९७७५	मो.-९८३७४०२१९२	मो.-९८३७४०२१९२

मानव-समाजोत्थान की दिशा में वैदिक वाङ्मय में प्रेरक तत्व

डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री (महोपदेशक)
साहित्य अकादमी एवं राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित

विश्व के साहित्य के इतिहास में जिस प्रकार संस्कृत भाषा अत्यन्त प्राचीन मानी जाती है, उसी प्रकार संस्कृत भाषा में उपनिबद्ध वैदिक वाङ्मय का महत्व भी न केवल अत्यन्त प्राचीनतम हैं अपितु उपयोगिता की दृष्टि से यह आज भी मानव समाज के लिए न केवल अत्यन्त आवश्यक है अपितु हमारे संस्कृत साहित्य के लिए यह आज भी प्रेरणा का स्रोत है। महाभारत के अनुशासन पर्व में वैदिक वाङ्मय की प्राचीनता एवं उपयोगिता के संदर्भ में एक श्लोक मिलता है-

यानीहागमशास्त्राणि याश्च काश्चित् प्रवृत्तयः।
तानि वेदं पुरस्कृत्यं प्रवृत्तानि यथाक्रमम्।। महा. १२२/४

याज्ञवल्क्य स्मृति में भी लिखा है-

न वेदशास्त्रादन्यतु किचिंच्छास्त्रं हि विद्यते।
निःसृतः सर्वशास्त्रं तु वेदशास्त्रात् सनातनात्।। याज्ञवल्क्य १२/१

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सामाजिक एवं व्यावहारिक ज्ञान के लिए भी वैदिक वाङ्मय के उपदेश हमारे लिए प्रारम्भ से ही उपलब्ध रहे हैं। इन समस्त उपदेशों का मूल हमारे भारतीय वाङ्मय में वेद ही रहा है। मनुस्मृति में तो लिखा है कि - वेदशास्त्र के वेत्ता को राज्यव्यवस्था, सैन्यनीति तथा दण्डनीति आदि सामाजिक एवं राजनैतिक प्रशासन का भी पूर्ण ज्ञान होता है-

सेनापत्यं च राज्यं दण्डनेतृत्वमेव च।
सर्वलोकाधिपत्यं च वेदशास्त्रविदर्हति।। मनु. १२/१००

इस प्रकार वैदिक वाङ्मय की उपयोगिता हमारे लिए आवश्यक प्रतीत होती है। मध्यकाल में वैदिक वाङ्मय का अध्ययन बहुत कम हो गया था। वेदों की उपयोगिता अनेक आचार्यो ने केवल यज्ञ-याग में मंत्र पाठ तक सीमित कर दी थी। वेद कुछ निहित लोगो की ही वस्तु बनकर रह गये थे। यह माना जाने लगा कि 'यज्ञार्थ वेदा अभिप्रवृत्ता' अर्थात् वेदों की रचना का उद्देश्य केवल मात्र यज्ञ भूमि तक ही है। वेद मंत्रों में व्यक्त विचार हमारे दैनिक जीवन में कितने उपयोगी तथा मानव समाज के कल्याण के लिए कितने आवश्यक है?इसका आधुनिक युग में परिचय कराने का श्रेय १६वीं शताब्दी के महान वेद चिन्तक महर्षि दयानन्द को जाता है।

महर्षि दयानन्द ने वेद को कुछ सीमित पढ़ने पढ़ाने वाले व्यक्तियों के बीच से निकालकर इसको व्यापक आयाम दिया। स्वयं वेद में लिखा है कि इसका ज्ञान मानव मात्र के लिए है केवल किसी एक व्यक्ति विशेष या वर्ग विशेष के लिए नहीं। यह तो समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए उपयोगी एवं अधिकृत है-

यथेमां वाचै कल्याणीमावदानी जनेभ्यः
बृह्मराजन्याभ्याशूद्राय चार्य्याय च स्वाय चारणाय च।। यजु. २६/२

मध्यकाल में स्त्रियां, शूद्र एवं अन्य बहुत सारे पिछड़े लोग इसलिए नहीं पढ़ पाते थे क्योंकि अध्ययन का चरम ज्ञान 'वेद' को उन्हें पढ़ने का अधिकार नहीं प्राप्त था। इसीकारण वेद के पढ़ने वालों की संख्या सीमित होती गयी तथा उसकी सामान्य समाज में उपयोगिता भी अल्पतम होती गयी। महर्षि दयानन्द १६वीं शताब्दी के प्रथम ऐसे भाष्यकार थे जिन्होंने वेद को यज्ञ के मात्र कर्मकाण्ड से हटाकर उसकी उपयोगिता का डिण्डिम नाद करते हुए उसकी सामाजिक उपयोगिता बताई तथा अपने वेद भाष्य में सामान्य माननीय व्यवहार का व्याख्याता वेद है, इसको स्वीकार किया। इसी कारण उनका वेदभाष्य सामान्य तथा पूर्व आचार्यो की याज्ञिक पृष्ठभूमि की व्याख्या की लीक से हटकर एक ऐसा व्यापक अर्थ प्रकट करने वाला तथा सब प्रकार का मानवीय सामाजिक मूल्यों का प्रतिष्ठापक अर्थ की व्याख्या करने वाला माना गया।

१. पुरूषार्थ प्रेरित यथार्थवाद- मध्यकालीन चिन्तन जहां मनुष्य में पराधीनता, हताशा, जुगुप्सा, दैन्य एवं आत्मग्लानि का भाव भरता है वहीं वेद का चिन्तन हमें आज भी पुरूषार्थ के लिए प्रेरित करता है। वैदिक संहिताओं ने हमें आशा, उद्यम तथा पुरूषार्थ के लिए प्रेरित करते है।यहां - पापोऽहं पापकर्माऽहं पापात्मा पाप सम्भवः'' का उद्घोष नहीं है। यजुर्वेद में कहा गया है - ''शुक्रोऽसि भ्राजोऽसि'' अर्थात् हे जीव! तू शुद्ध है, तेज स्वरूप है। वेद में संतान के वीर एवं बलवान होने की कामना करते हुए लिखा है- ''अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु'' इसमें समग्र विश्व को आर्य श्रेष्ठ बनाने की कामना है- ''इन्द्र वर्धन्तो असुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।''

अथर्ववेद कहता है- यथा सूर्यो अतिभाति यथांऽस्मिन्तेज आर्हितम्।
एवा में वरणो मणिः कीर्ति भूतिं नि यंच्छतु।।

अर्थात् मनुष्य को चाहिए कि वह प्रार्थना करे तथा विचारे कि जैसा तेज सूर्य में समाविष्ट है वैसा ही तेज एवं ऊर्जा हमारे अन्दर विद्यमान हो तथा हमें स्वात्म-प्रकाश से परिपूर्ण होकर संसार में चमकाये।

२. सदाचारोन्मुख जीवन- वेद में सामाजिक स्वास्थ्य एवं आदर्श प्रेरित मानव समाज के लिए नाना प्रकार की मर्यादाओं की भी चर्चा की गयी है। ऋग्वेद में लिखा है-

सप्त मर्यादाः कुवयंस्ततक्षुस्तासामेकामिदभ्यैहुरो गांत्।।

अर्थात् हिंसा चोरी, व्याभिचार, मद्यपान, जुआ, असत्य भाषण और इन पापों को करने वाले दुष्टों का असहयोग का नाम ही सप्तमर्यादा है। इनमें से एक भी मर्यादा का उल्लंघन करने वाला एक पाप करता है और वह पापी होता है। अथर्ववेद में लिखा है-

न द्विषन्नश्नीयात् न द्विषदतोऽन्नमश्नीयात्।

अर्थात् न द्वेष करता हुआ अन्न खाये और न ही द्वेषी का अन्न खाये। वेद में जुआ खेलने की निन्दा करते हुए कर्मठ जीवन बताकर कृषि आदि द्वारा परिश्रमपूर्वक धन प्राप्त करने की प्रशंसा की गई है। ऋग्वेद में आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया - ''अक्ष-सूक्त'' इसका प्रमाण है। वहाँ स्पष्ट लिखा है-

अक्षैमां दीव्यः कृषिमित्कृंषस्व वित्ते रंभस्व बहु मन्यमानः।।

मीठा और सुन्दर वचन बोलने के लिए वेद प्रेरित करते हुए कहते हैं- 'घृतात् स्वादीयो मधुंनश्च वोचत।।

अर्थात् घृत और मधु से भी मीठा वचन बोलना चाहिए।

३. विश्व बंधुत्व की भावना- वेदा में विश्वबंधुत्व की भावना अतिशय दृष्टिगत होती है। यहां अतिक्षुद्र संकीर्ण भावना या प्रतिस्पर्धात्मक राष्ट्रवाद की भावना से ऊपर उठकर सम्पूर्ण पृथ्वी को एक विशाल राष्ट्र के रूप में निरूपित करते हुए इसके समस्त प्राणियों में एक ऐसी विश्वबधुत्व की भावना को समाहित करने का उपदेश दिया गया है जो अन्य साहित्य में दुलर्भ है। यजुर्वेद में लिखा है-

मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।।

अर्थात् मैं प्राणीमात्र को मैत्रीपूर्ण दृष्टि से देखूँ तथा समस्त जीव भी मुझे मैत्रीपूर्ण निर्भय दृष्टि से देखें। इस प्रकार हम एक दूसरे के लिए मित्रवत् रहें।

सामवेद के एक मंत्र में लिखा है कि स्तुति करने वालो! तुम सब आओ, हम सब लोग एक साथ बैठकर प्रभु का गुणगान करें तथा उसकी महिमा भी बखानें-

सखाय आ नि षीदत पुनानाय प्र गायत।
यह भूमि मेरी माता है तथा मैं इसका पवित्र पुत्र हूँ।
माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः।

इस प्रकार हम देखते हैं कि वेद में एक विश्वजनीत भावना वर्णित है जो आजकल के स्वार्थ प्रधान मानव समाज में एक ज्योतिपूर्ण आशा का संचार करता है।

४. पारिवारिक जीवन के संदर्भ में वेद- वेदों में नारी को भी पुरूष के समान ही परिवार निर्माण में एक सहयोगी की भूमिका के रूप में देखा गया है। उसका स्थान किसी भी प्रकार से कम नहीं है। उसे परिवार में आदर के साथ 'सम्राज्ञी' की पदवी प्रदान की गयी है जो उसके लिए श्वसुर-सास और ननद की दृष्टि से भी है-

सम्राज्ञी श्वशुरे भव सम्राज्ञी श्वश्वां भंव।
ननांन्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधिं देवृषुं।।
वह पति एवं घर के लिए पूर्ण सुखकारी होती है।
स्योना भंव श्वर्शुरेभ्यः स्योना पत्यें गृहेभ्यंः।

वेद में पत्नी को सदा शांत एवं मधुरवाणी में ही पति से बात करने की चर्चा है क्योंकि पारिवारिक शांति के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

जाया पत्ये मर्धुमर्ती वाचं वदतु शन्तिवाम्।

पति पत्नी को चक्रवाक अर्थात् चकवा-चकवी के समान एक दूसरे के साथ प्रेमपूर्वक रहने की भी चर्चा की गयी है।

चक्रवाकेव दम्पति।

पारिवारिक संदर्भ में पिता-पुत्र, भाई बहन तथा भाई भाई एवं बहन बहन का भी आपसी सम्बन्ध विद्वेषरहित हो इसकी स्पष्ट चर्चा की गयी है-

अनुंव्रतः पितु र्भ्रार्तरं द्विक्षन् मा स्वासारभूत स्वसां।।

इस प्रकार हम देखते हैं कि वैदिक वाङ्मय हमें बहुविधि व्यापक रूप से जीवन, समाज-व्यवस्था बिन्दुओं का समग्र रूप से चिन्तन प्रस्तुत करते हुए उत्थान को प्रेरित करता है।

यह सामंजस्य एवं प्रगतिशीलता ही वेद की सबसे बड़ी विशेषता है। इसी कारण यह हमें आज भी उतना ही उपयोगी एवं महत्वपूर्ण प्रतीत होता है जितना कि भूतकाल में कभी था।

बी-२१, आनन्दनगर, जेल रोड़
मो.-६४५१०७४१२३

आर्य समाज रामनगर खटकरी का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

सीतापुर आर्य समाज रामनगर खटकरी सीतापुर का तीसरा वार्षिकोत्सव दिनांक १३, १४ व १५ अप्रैल २०१६को आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. के प्रतिष्ठित सदस्य चौ.रणवीर सिंह की गौरवमयी उपस्थिति में धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर प्रातः काल यज्ञ, भजन, व प्रवचन दोपहर को विभिन्न सम्मेलन एवं सायं को आर्य समाज की महती आवश्यकता पर प्रवचन हुए। सहारनपुर से पधारे पं. शिव कुमार शास्त्री द्वारा श्री राम के जीवन पर दिया गया प्रवचन बहुत ही प्रभावी रहा। मुजफ्फर नगर से आये पं. धनश्याम प्रेमी के क्रांतिकारी व सामयिक गीतों का लोगों ने भरपूर आनन्द लिया। स्वामी महावीर के ढोंग व पुराणपंथी विचारों पर दिये गये प्रवचन का जन मानस पर गहरा प्रभाव पड़ा। छोटी बच्ची कु. ब्रजेन्द्री आर्या ने अपने भजन से उपस्थित जन समुदाय को मंत्रमुग्ध कर दिया। आर्य समाज रामनगर खटकरी के प्रधान दर्शन लाल मिश्र ने सभी आगन्तुकों के प्रति आभार प्रकट किया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रतिष्ठित सदस्य चौधरी रणवीर सिंह ने छोटे से गांव रामनगर में आर्य समाज के विशाल वार्षिकोत्सव का आयोजन करने पर प्रधान दर्शन लाल व उनके सभी कार्यकर्ताओं को बधाई दी तथा साथ साथ यह भी सूचना दी कि दिनांक १०, ११ व १२ जून २०१६ को नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ तल्ला नैनीताल आर्य समाज के शिविर में अधिक से अधिक लोग भाग लें। इस दौरान शचीन्द्र शास्त्री, गोपी कृष्ण आर्य, दिनेश दिलवानी, डा. रामऔतार आर्य, हरेराम अवस्थी, नेतराम आर्य आदि उपस्थित रहे। यज्ञ के यजमान अभिनाम मिश्र, अविनाथ मिश्र, आभास मिश्र सपत्नीक रहे।

दर्शन लाल मिश्र, प्रधान
आर्य समाज रामनगर खटकरी, सीतापुर

पृष्ठ..............३ का शेष

कराया। स्वामी जी दिल्ली से सोनीपत रेल द्वारा और वहां से १२ कोस की यात्र अपार जनसमूह के साथ स्वामी जी ने पैदल ही पूरी की बैलगाड़ियों पर नहीं बैठे और क्षेत्र में उत्साह वर्धक उपदेश किया। अगले १६२० ज्येष्ठ मास में प्रथम वार्षिक उत्सव पर स्वामी जी की अपील पर अपार धन वर्षा हुई और भवन निर्माण कार्य हो गया भूमि का कार्य भी तपस्या से ही पूरा हुआ। गुरूकुल को केन्द्र बनाकर समाज सेवा के कार्य भी साथ-साथ करते रहे और अपनी साधना भी वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा प्राप्त कर ली विरोधियों को आत्मिक से आत्मीय बनाना आपकी साधना थी मान्धरा में विशाल पंचायत करके सन् १६२५ में विवाह एवं मृत्यु भोज पर अनर्गल खर्च पर प्रतिबन्ध लगाया और सर्वसमरज के लिए हितकारी नियम बनाये तथा लागू करवाये गए।

बीघल ग्राम में चौपाल बनवाने के लिए प्रयास किया और सफल हुए। डबरपुर ग्राम के नेकीराम और भरतसिंह के भूमि विवाद को समाप्त कराया। उन्नीस दिन तक अनशन करके गोचर भूमि को छुड़वाया १६२८ में जीन्द जिले के ललतखेड़ा ग्राम में गौओं को घरों में देखकर दुःखी हुए और कहा कि जब तक गोचर भूमि नहीं छोड़ोगे मैं अन्न जल ग्रहण नहीं करूंगा १६ दिन में जाकर लोगों ने स्वीकार किया और गोचर हेतु भूमि सुरक्षित की। पलवल के तथा होडल के जाट मुसलमान हो गए थे तो वहां जाकर ११ दिन अनशन किया। और उन्हें पुनः हिन्दू (आर्य) बनाकर भोजन ग्रहण किया। इसी प्रकार जागसी ग्राम में २ परिवारों के विवाद में कत्ल हो गया था उस परिवार को मनाकर फैसला कराया और दोनों परिवार बचाये। रोहतक में गोरक्षा सम्मेलन किया उसमें मालवीय जी को काशी से बुलाकर सम्मानित किया। सिरसा जॉटी ग्राम के नेकीराम की पुत्री को यवन ले गए थे उसे छुड़ाकर वापस सौंप दिया १६३६ में कन्या गुरूकुल खानपुर की स्थापना की जो आज प्रभु कृपा से भक्त फूलसिंह कन्या विश्वविद्यालय बन चुका है। दलितों के लिए कुँआ बनवाना, हैदराबाद सत्याग्रह समिति का अध्यक्ष बनना, मान-अपमान से ऊपर उठकर विरोधी की भी सेवा करना आपके जीवन की प्रसिद्ध घटनायें है १६४० में हैदराबाद के निजाम की तरह लोहारु के नवाब ने अत्याचार प्रारम्भ कर दिये थे आर्य समाज का उत्सव नहीं होने देते थे भक्त फूलसिंह जी ने नवाब से वार्ता की और वह तैयार हो गया अप्रैल १६४१ को उत्सव निश्चित हुआ स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी पंजाब, समरसिंह वेदालंकार जी एवं म० नोनन्द सिंह जी भजनों पदेशक थे शोभायात्रा में पूज्य स्वामी जी नेतृत्व कर रहे थे भक्त फूलसिंह जी, वेदालंकर जी एवम् नोनन्द सिंह जी बाद में स्वामी नित्यानन्द जी के नाम से प्रसिद्ध हुए जलूस में नवाब के व्यक्तिओं ने आक्रमण कर दिया जो एक भयंकर रूप था मुख्य नेता बेहोश हो गए अपराधी बनाकर जेल में डाल दिया गया- गुरूकुल भैंसवाल के अधिकारी डी.सी. हिसार का पत्र लेकर मिले और छुड़ाकर इलाज कराया भक्त फूलसिंह जी २ मास तक दिल्ली इरविन अस्पताल में रहे यह बलिदानी घटना आर्य समाज के इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ है जो आज भी प्रेरणा प्रदान कर रहा है।

बलिदानी परम्परा - स्वामी श्रद्धानन्द जी की तरह ही जीवन जीने वाले और मृत्यु भी इसी परम्परा से आई तथा अमर बलिदानी .... भक्त फूलसिंह प्रेरक समाज सेवी बन गए। बार-बार के अनशन एवं तपस्या से शरीर कृश हो गया था संस्थाओं का कार्यभार भी उत्तराधिकारियों को सौंप दिया था १४ अगस्त १६४२ को रात्रि ६ बजे आप अपने भक्तों का साधना सिखा रहे थे ५ पवन घातक सिपाही वेश में एक बन्दूक २ पिस्तौल बैट्री हाथ में लेकर बोले कि यहाँ फौजी भगोड़े रखते हो तुम सरकार से गद्दारी करते हो भक्त जी ने कहा यह स्थान तो लड़कियों के पढ़ने का है यहां कोई भगोड़ा नहीं है आप हम पर पूर्ण विश्वास करें। इतना कहने पर उन्होंने पिस्तौल के ३ फायर किये और बलिदानी परम्पराओं में अमर हो गए स्वामी श्रद्धानन्द जी को भी ३ गोलियां लगी थी वे भी कृशकाय हो गए थे दोनों के जीवनदर्शन-समाज सेवा कार्य एवं गुरूकुलीय शिक्षार्थ पुरुषार्थ तथा बलिदान, अदम्य उत्साह, लम्बाई, धैर्य, बहुत अंशो में साम्यता दिखाई देती है। आर्य समाज का इतिहास बलिदानी परम्परा से थी पूर्व है। भक्त फूलसिंह जी की तरह आर्य समाज के कार्यकर्त्ता - अधिकारी और सभासद सदस्य सभी के लिए चिन्तनीय क्षण हैं उनके अधूरे कार्य को पूर्ण करने की आज महती आवश्यकता है। प्रत्येक आर्य के लिए एक चुनौती पूर्ण समाधान भी है कि जब ऐसे जीवन से भी आत्म मन्थन, आत्म चिन्तन, आत्मशोधन, द्वारा इतिहास के प्रेरणा पुंच के रूप में आदर्श हो सकते है तो आपको तो शीघ्र सफलता प्राप्त हो सकती है। प्रभु संकल्पशक्ति प्रदान करें।

मैं इतिहास पुरुष वीर बलिदानी को सादर नमन करता हूँ

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र.
संचालक-गुरूकुल पूठ, हापुड़

आवश्यक सूचना

प्रदेश की समस्त आर्य समाजों के प्रधान/मंत्री महोदय को अवगत कराया जा रहा है कि आर्य समाज के प्रत्येक सदस्य का प्रवेश पत्र (सदस्यता फार्म) पूरित करके ही सदस्य बनाये। उसकी प्रमाणिकता के लिए उसकी तीन प्रतियां बनाकर एक स्थानीय प्रति, एक प्रति जिला कार्यालय व एक प्रति प्रदेशीय कार्यालय में जमा करायें। प्रदेशीय अधिकारियों द्वारा निरीक्षण समय में प्रवेश पत्र, प्रवेश पंजिका, आय-व्यय पंजिका, बैंक खाता एवं कार्यवाही पंजिका तथा (स्टाफ) सामान सूची पंजिका व अन्य विवरण जो समाज से संबंधित संस्थाओं का विवरण हो उसका भी निरीक्षण करायें।

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री

समस्त जिला प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों को अवगत कराया जा रहा है कि अपने जिले के समस्त अधिकारियों एवं अंतरंग सदस्यों के नाम पते तथा फोन नंबर अंकित करके सूची तैयार करें तथा उस सूची को यथाशीघ्र प्रदेश कार्यालय में अनिवार्य रूप से जमा कराने की कृपा करें।

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री

काशी आर्य समाज स्थापना का 141वां दिवस समारोह

आर्य समाज सहित सभी राष्ट्रवादी ताकतें एकजुट हों-

-जय प्रकाश भारती

स्वामी दयानन्द ने सबसे पहले ''स्वराज्य'' का मंत्र दिया था और देशवासियों की धमनियों में राष्ट्रवाद का उष्ण रक्त भी प्रवाहित किया था। आज राष्ट्रविरोधी तत्व आतंकियों के समर्थन में खड़े दिखाई देते है इस गंभीर परिस्थितियों में एकात्मता और संगठन के साथ आर्य समाज सहित सभी राष्ट्रवादी ताकतों को एकजुट होना होगा। उक्त विचार काशी आर्य समाज बुलानाला में आयोजित आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित ''राष्ट्ररक्षा आतंकवाद तथा दलित व नारी विमर्श'' विषयक संगोष्ठी में रविवार को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के पुस्तकाध्यक्ष डा. जय प्रकाश भारती ने बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किये।

काशी आर्य विद्वत परिषद के अध्यक्ष पं.ज्ञान प्रकाश आर्य ने बताया कि कथित सेक्यूलर और साम्प्रदायिक ताकतें दलितों को हिन्दू समाज से अलग करने का सुनियोजित षडयंत्र चला रही है, आर्य समाज ने स्वामी श्रद्धानंद के नेतृत्व में दलितों को अपनाया था आज दलितों के साथ समरसता बढ़ानी होगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. लखनऊ से पधारे पूर्व उप प्रधान व पुस्तकाध्यक्ष रमाशंकर आर्य ने कहा कि जो लोग विकृत परम्पराओं के चलते महिलाओं की आधी आबादी को उनके दर्शन पूजा से वंचित करना चाहते हैं वे राष्ट्र को कमजोर कर रहे हैं।

अध्यक्षीय सम्बोधन में श्री नाथ सिंह पटेल ने कहा कि महिलाओं पर राष्ट्र निर्माण की जिम्मेदारी पुरूषों से ज्यादा है भारत की संस्कृति व संस्कारों से वह अपने परिवार को शिक्षित व दीक्षित करने में सचेतन बनें।

आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर काशी आर्य समाज के कोषाध्यक्ष डा. विशाल सिंह को आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र. का वरिष्ठ मंत्री चुने जाने पर वाराणसी तथा चंदौली व जौनपुर की आर्य समाजों द्वारा माल्यार्पण कर भव्य स्वागत किया गया। डा.विशाल सिंह ने उपस्थित आर्य जनों के प्रति आभार प्रकट करते हुए स्वामी दयानन्द के मिशन के लिए आर्य समाज की सेवा करने का संकल्प दोहराया।

इस अवसर पर सर्वश्री प्रकाश नारायण शास्त्री, ब्रजभूषण सिंह, एस.एन.सिंह कुशवाहा, ईशराज यादव, सियालाल कन्नौजिया, डा. गायत्री आर्या ने उपस्थित होकर अपने अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का प्रारम्भ वैदिक यज्ञ से हुआ, श्री रमेश जी आर्य, लल्लन आर्य ने सुमधुर भजन प्रस्तुत किया,संचालन प्रकाश नारायण शास्त्री, धन्यवाद प्रकाश विवेक सिंह एडवोकेट तथा शांति पाठ मोती लाल आर्य ने किया।

श्री नाथ सिंह पटेल
प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के कार्यालय अध्यक्ष के ज्येष्ठ भ्राता का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के कार्यालय अध्यक्ष श्री सियाराम वर्मा के ज्येष्ठ भ्राता श्री विद्या प्रसाद वर्मा का दिनांक ४/४/२०१६ को अकस्मात निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से ग्राम पेनीपुरवा बाराबंकी में किया गया। जिसमें पारिवारिक जनों, इष्ट मित्रों आदि ने अश्रुपूरित नेत्रों से अंतिम विदाई दी।

दिनांक ६/४/२०१६ को शांति यज्ञ डा. राम नरायन गुप्ता के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात शोक सभा का कार्यक्रम रखा गया जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा, प्रतिष्ठित सदस्य डा. भानु प्रकाश जी, कार्यालय के समस्त कर्मचारी गण पारिवारिक सदस्य आदि उपस्थित थे।

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्स:०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०६४१२६७८५७१, मंत्री-०६८३७४०२१६२, सम्पादक-६५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
....
....
....

अर्द्धकुम्भ मेला हरिद्वार में फहराई पाखण्ड खण्डिनी पताका

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा ने दिनांक २०मार्च से १३ अप्रैल २०१६ तक चलने वाले आर्य समाज के विशेष वेद प्रचार शिविर में पहुँच कर उत्साहवर्धन किया। उनका स्वागत उत्तराखण्ड के श्री गोविन्द सिंह भण्डारी, श्री वीरेन्द्र पंवार आदि ने किया।

इस अवसर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती की पूर्व परम्परा को जीवन्त करते हुए पाखण्ड खण्डिनी पताका का आरोहण भी किया गया। जो अर्द्धकुम्भ मेला हरिद्वार का विशेष आकर्षण का केन्द्र रही। मेले में आने वाले धार्मिक जन मानस को वैदिक धर्म को मानने, एक ईश्वर की उपासना तथा सामाजिक एवं धार्मिक अंधविश्वासों को त्यागने के लिए प्रेरित किया गया। आर्य जगत के श्रेष्ठ विद्वानों, भजनोपदेशकों व कार्यकर्ताओं व पदाधिकारियों आदि ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया।

प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के सफल नेतृत्व में समारोह सम्पन्न हुआ।

राष्ट्र भक्त मातृ-पितृ भक्त सिखा सकता आर्य समाज -स्वामी आर्यवेश जी

आर्य समाज बुढ़ाना मुजफ्फर नगर के तीन दिवसीय यज्ञ एवं उत्सवों के समापन अवसर पर दिनांक १६ अप्रैल, २०१६ को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से पधारे यशस्वती प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने उपस्थित छात्र-छात्राओं को सम्बोधित करते हुए ईश्वरभक्ति, मातृ-पितृ भक्ति, गुरूभक्ति, देवभक्ति तथा देशभक्ति के सम्बन्ध में भावपूर्ण संदेश देते हुए छात्र-छात्राओं की उन्नति का पथ प्रशस्त किया और संकल्प दिलवाया कि अपने जीवन में अच्छी शिक्षाओं को धारण करते हुए उक्त देवों के प्रति श्रद्धा का भाव अपने जीवन में हमेशा बनाये रखेंगे तो जीवन में हमेशा उन्नति करते हुए अच्छे नागरिक कहलाये जायेंगे। स्वामी जी ने कहा कि जीवन में सत्य की प्रतिष्ठा हो जाये तो मन में निर्मलता आती है। निर्मलता शरीर का भी धर्म है और मन का भी। शरीर के मैल को साबुन से छुड़ाया जा सकता है, शरीर के मन को दूर करना सरल है लेकिन मन को निर्मल बनाना कठिन है और यह कार्य गुरू करता है। अतः अपने गुरूजनों को सदैव आदर करें और उनसे श्रद्धापूर्वक ज्ञान अर्जित करते रहें। वे ही आपको राष्ट्र भक्ति सिखा सकते हैं जो जीवन के लिए अमूल्य गुण है।

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक-आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक-श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है-सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।